3

मृत्यु के बाद जीवन का आश्वासन

''परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उन में पहिला फल हुआ'' (1 कुरिन्थियों 15:20)।

मृत्यु के बाद जो होता है, उसे दिखाया नहीं जा सकता। यद्यपि कुछ लोगों ने मुर्दों को जिलाया है (पृष्ठ 103 पर आगे दिया गया चार्ट देखें), परन्तु हमें इस जीवन के बाद के उनके अनुभव के बारे में कुछ जानकारी नहीं है।

हम में से अधिकतर लोग जीवित रहना चाहते हैं। सुलैमान ने कहा था, ''उसने मनुष्यों के मन में अनादि-अनन्त काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौ भी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता'' (सभोपदेशक 3:11)। हम में से अधिकतर लोग मृत्यु के बाद फिर से अपने प्रियों को देखने की आशा करते हैं। हम कब्र से आगे जीवन की आशा रखते हैं। हम मृत्यु को बन्द दरवाज़ा नहीं होने देना चाहते; हम भविष्य के अस्तित्व में जाने के लिए एक रास्ता चाहते हैं।

दार्शनिकों ने ऐसे विचार प्रस्तुत किए हैं जो उन्हें लगता है कि मृत्यु के बाद जीवन के अस्तित्व की पुष्टि या खण्डन करते हैं। उनके निष्कर्षों को केवल तर्कों से साबित नहीं किया जा सकता। हो सकता है कि जो तर्क से सच लगता हो वह वास्तव में सच न हो।

अय्यूब के प्रश्न का कि ''यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा?'' (अय्यूब 14:14), उत्तर केवल परमेश्वर के प्रकाशन से ही दिया जा सकता है। फिलॉसफी और तर्क से मृत्यु के बाद के जीवन का प्रयोग सिद्ध वाला प्रमाण या बिना किसी संदेह के आश्वासन नहीं दिया जा सकता। केवल अनश्वर प्रकाशन ही ऐसा कर सकता है। कब्र के बाद जीवन में विश्वास का आधार उतना ही मज़बूत हो सकता है, जितना मज़बूत इसका प्रकाशन है। यदि हमारे पास परमेश्वर की ओर से कोई प्रकाशन नहीं है, तो जीवन के बाद के किसी आश्वासन को पक्का नहीं माना जा सकता।

पुराने नियम से आश्वासन

यद्यपि पुराने नियम में अनन्त जीवन की प्रकृति मुख्य बात नहीं है, पर इमसें मृत्यु के

बाद जीवन के संकेत अवश्य हैं। इस्राएली लोग इस बात के प्रमाण के लिए कि वे फिर से जीवित रहेंगे, पवित्र शास्त्रों में से सावधानीपूर्वक ढूंढ़ते थे।

नीचे कुछ आयतें दी गई हैं, जिन्हें वे मृत्यु के बाद जीवन की शिक्षा के लिए समझते थे:

> व्यवस्थाविवरण 32:39–''मैं ही मार डालता, और मैं जिलाता भी हूं।''
>
> भजन संहिता 17:15–''परन्तु मैं तो धर्मी होकर तेरे मुख का दर्शन करूंगा; जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से संतुष्ट होऊंगा।''
>
> सभोपदेशक 12:7–''तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी।''
>
> यशायाह 26:19–''तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसने वालो, जागकर जय-जय कार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी।''

ये बातें मृत्यु के बाद के जीवन की हो सकती हैं, पर इनसे यह पता नहीं चलता कि दोबारा जी उठने वाले लोग वैसे ही या उस संसार के स्वभाव वाले होंगे, जिसमें वे रहेंगे। नया नियम दोनों के बारे में काफ़ी जानकारी देता है।

पुराने नियम की और आयतों से यह शिक्षा मिल सकती है कि वे फिर जीएंगे। परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, ''तू तो अपने पितरों में कुशल के साथ मिल जाएगा; तुझे पूरे बुढ़ापे में मिट्टी दी जाएगी'' (उत्पत्ति 15:15; देखें 25:8; 35:29; 49:33)। ''पितरों के साथ मिल जाएगा'' वाक्यांश का अर्थ हो सकता है कि अब्राहम के पूर्वज जीवित थे, पर किसी दूसरे संसार में क्योंकि यदि वे थे ही नहीं तो वह उनके पास कैसे जा सकता था?

अय्यूब ने मरे हुओं की स्थिति की बात की है:

> उस दशा में दुष्ट लोग फिर दुख नहीं देते,
> और थके मांदे विश्राम पाते हैं।
> उस में बन्धुए एक संग सुख से रहते हैं;
> और परिश्रम कराने वाले का शब्द नहीं सुनते।
> उस में छोटे-बड़े सब रहते हैं,
> और दास अपने स्वामी से स्वतन्त्र रहता है (अय्यूब 3:17-19)।

उसने मृत्यु के बाद के जीवन का भी यह कहते हुए संकेत दिया है:

> अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी,

मैं शरीर में होकर ईश्वर का दर्शन पाऊंगा।
उसका दर्शन मैं आप अपनी आंखों से अपने लिए करूंगा, और न कोई दूसरा।
यद्यपि मेरा हृदय अन्दर ही अन्दर चूर चूर भी हो जाए (अय्यूब 19:26, 27)।

अपने बच्चे की मृत्यु पर शोक करते हुए, दाऊद को इस विचार से सांत्वना मिली कि वह उसके पास जा सकता है (2 शमूएल 12:23)। इससे यह पता चलता है कि दाऊद मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास रखता था। यदि उसके पुत्र का अस्तित्व था ही नहीं तो वह उसके पास अपने जाने की बात कैसे कर सकता था? दाऊद ने उसकी भविष्यवाणी की जिसका प्राण अधोलोक में छोड़ा नहीं जाना था (भजन संहिता 16:10)। यह आयत प्रेरितों 2:25-28 में यीशु के लिए कही गई।

दानिय्येल ने लिखा, ''और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए'' (दानिय्येल 12:2)।

इन आयतों से संकेत मिलता है कि हमारा अस्तित्व केवल इसी जीवन में नहीं है। मृत्यु के बाद हम आत्मिक संसार में रहेंगे।

नये नियम से आश्वासन

नया नियम मृत्यु के बाद जीवन की शिक्षा देता है। अनन्त जीवन यीशु की शिक्षा का एक प्रमुख विषय है (यूहन्ना 4:36; 6:54; 10:28; 12:25; 17:2, 3), और यह विषय पूरे नये नियम में जारी रहता है (प्रेरितों 13:48; रोमियों 2:7; 1 तीमुथियुस 6:12)।

यीशु का पुनरुत्थान हमें मृत्यु के बाद जीवन का प्रमाण देता है। उसके पुनरुत्थान में हमें मृत्यु के बाद जीवन की आशा (1 कुरिन्थियों 15:13-22) और यह आश्वासन मिलता है कि हम फिर से जीएंगे। उसने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं'' (यूहन्ना 11:25); ''इसलिए कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे'' (यूहन्ना 14:19)। यीशु ने ''मृत्यु का नाश किया, और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया'' है (2 तीमुथियुस 1:10)।

मसीही व्यक्ति के लिए मृत्यु के बाद जीवन का आश्वासन किसी फिलॉसफी या तर्क या फिर से जीवित होने की हमारी भीतरी तड़प के आधार पर नहीं है। मृतकों के पुनरुत्थान में विश्वास करने के कुछ कारण हो सकते हैं, पर वे प्रमाण नहीं हैं। मसीही व्यक्ति का आश्वासन कई तथ्यों पर आधारित है:

परमेश्वर संसार का सृष्टिकर्त्ता है।

यदि परमेश्वर नहीं है, तो ''कहीं कोई सामर्थ'' मृत्यु के बाद जीवन नहीं दे सकती। हमारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अस्तित्व है, और हमारी मृत्यु के बाद वह हमें जीवन दे सकता है (प्रेरितों 26:8)।

यीशु मसीहा, अर्थात परमेश्वर का पुत्र है।

यीशु मार्ग, सत्य और जीवन है (यूहन्ना 14:6)। जो कुछ उसने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में कहा है, वह सही है, क्योंकि उसने सच बताया है (यूहन्ना 18:37)। उसकी शिक्षा में हमें सच्चाई मिलती है (यूहन्ना 8:40); उसकी सामर्थ में हमें आश्वासन मिलता है (यूहन्ना 11:25, 26); उसके पुनरुत्थान में हमें आशा मिलती है (1 कुरिन्थियों 15:20-22); और उसके जीवन में हमें जीवन मिलता है (यूहन्ना 14:19)।

बाइबल परमेश्वर का वचन है।

प्रमाण इस बात को साबित करता है कि परमेश्वर के ईश्वरीय हाथ ने बाइबल लिखने वालों से लिखवाया (2 तीमुथियुस 3:16), जिसका अर्थ यह है कि मृत्यु के बाद जीवन से सम्बन्धित इसकी हर बात सच्ची है।

नये नियम के लेखकों की गवाही सच्ची है।

बिना किसी अपवाद के उन सब ने इसी बात की पुष्टि की कि उन्होंने जी उठे मसीह को पुनः जीवित देखा। उनमें से अधिकतर ने जो कुछ देखा और विश्वास किया वही लिखा; क्योंकि मृत्यु की धमकी का सामना करते हुए, उन्होंने उसके पुनरुत्थान की गवाही दी (प्रेरितों 5:29-31)।

हमारा विश्वास उस ज़बर्दस्त प्रमाण के आधार पर है कि परमेश्वर है, कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, कि नये नियम की गवाही विश्वसनीय है और यीशु ही मसीह है। इस प्रमाण पर हम भरोसा और विश्वास रखते हैं कि मृत्यु चाहे देह को नष्ट कर दे और हम मर जाएं, तौ भी हम जीवित रहेंगे।

सारांश

मृत्यु के बाद जीवन की हमारी तड़प को परमेश्वर के प्रकाशन से आश्वासन दिया गया है। हम प्रयोग के द्वारा यह सिद्ध नहीं कर सकते या दिखा नहीं सकते कि मरने के बाद हम जीवित रहेंगे। मृतकों के संसार के बारे में कभी किसी ने वापस आकर व्यक्तिगत गवाही नहीं दी है। मृत्यु के बाद जीवन का हमारा आश्वासन मसीह के पुनरुत्थान और परमेश्वर के प्रकाशन, विशेषकर यीशु मसीह के द्वारा दिए गए प्रकाशन पर आधारित है। हम जान सकते हैं कि मृत्यु की घटना के बीच में से गुज़रने पर हम अन्त में नहीं, बल्कि जीवन में जाएंगे।

पुराने और नये नियमों में लिखित पुनरुत्थान

1 राजा 17:20-23	सारपत की विधवा के पुत्र को एलिय्याह द्वारा जिलाया गया।
2 राजा 4:32-37	शुनामी स्त्री का पुत्र एलीशा द्वारा जिलाया गया।
2 राजा 13:21	मोआबियों द्वारा एलीशा की कब्र में गाड़ा गया व्यक्ति एलीशा की हड्डियों के स्पर्श से फिर से जीवित हो उठा।
लूका 7:11-17	नाईन की विधवा के पुत्र को यीशु ने जिलाया था।
मत्ती 9:18-25; मरकुस 5:22-43; लूका 8:41-56	आराधनालय के एक अधिकारी याईर की बेटी को यीशु द्वारा जिलाया गया।
यूहन्ना 11:23-44	यीशु द्वारा लाज़र को जिलाया गया।
मत्ती 27:52, 53	यीशु की मृत्यु के समय परमेश्वर ने कई पवित्र लोगों को जिलाया था।
मत्ती 28:1-8; मरकुस 16:2-8; लूका 24:1-12; यूहन्ना 20:1-10	यीशु जी उठा था।
प्रेरितों 9:36-41	पतरस ने दोरकास को जिलाया था।
प्रेरितों 20:9-12	पौलुस ने यूतुखुस को जिलाया था।